North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

IRJIF IMPACT FACTOR:6.019

ISSN: 2454-2326 Vol.9, Issue-12 December-2023

Index Copernicus Value: 58.12 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

NAIRJC A Peer Reviewed Refereed Journal

DOI: 10.5949/nairjmd.2023.10.12.1

आधुनिक परिवहन माध्यमों का गढवाल हिमालयी अर्थव्यवस्था में योगदान

डॉ0 भालचन्द सिंहनेगी

असि 0 प्रो0 भूगोल

रा0 स्ना0 महावि0 गोपेश्वर

चमोली, उत्तराखण्ड

मानव सभ्यता के विकास में परिवहन माध्यमों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, किसी भी क्षेत्र, प्रदेश की प्रगति वहा के यातायात साधनो पर निर्भर करती है। यदि कोई क्षेत्र प्राकृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने पर भी अगर अन्य क्षेत्रों से यातायात सम्बन्ध नहीं है तो वह क्षेत्र प्रगति नहीं कर सकता है। डॉ0 श्रस्किन के अनुसार–''किसी भी क्षेत्र की सडके समस्त सामाजिक प्रगति का निर्धारण करती हैं, और विकसित सडके समस्त आर्थिक समाजिक प्रगति का द्योतक हैं।''

श्री वैन्थम के अनुसार–''सडके किसी भी क्षेत्र या देश की उपयोगीता तथा मनचित्र (नक्शे) हैं, जिससे उस देश का विकास होता है।''

परिवहन मानव की सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के शसक्त माध्यम है, यह किसी क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति व सामाजिक दूरियों को कम करने के शसक्त माध्यम है, किसी क्षेत्र के सांस्कृतिक परिवेश पर वातावरण का क्या प्रभाव पडा है, यह उस क्षेत्र के परिवहन साधनो से जाना जा सकता है। परिवहन के साधन ग्रामीण व सुदूर–पूर्व क्षेत्रों में केवल सुविधा का साधन ही नही है बल्कि ये उस क्षेत्र विशेष की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ सांस्कृतिक,सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा शिक्षा जैसे सभी सामाजिक पहलुओं के पिछडेपन को दूर करने का सर्वोच्च माध्यम है। परिवहन के आधुनिक माध्यम जनजातिय व अविकसित सामाजिक रूप से पीछडे क्षेत्रों में जहॉ भौगोलिक परिवेश सामाजिक सांस्कृतिक विकास की अधिक छुट नही देता वहा भी परिवहन व संचार के साधनो का महत्व बढ़ जाता है। इन पिछडे क्षेत्रों में परिवहन के माध्यमों ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप में परिवर्तन कर महत्वपूर्ण योगदान अदा किया है।

आधुनिक परिवहन माध्यमों ने सांस्कृतिक–सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन के साथ–साथ क्षेत्र विशेष की सभ्यता एवं ज्ञान में बृद्धि करने का कार्य किया है। जिससे मनुष्य और समाज का कल्याण सम्भव हुआ, ये सभी साधन विशिष्टीकरण को प्रोत्साहित करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिचयः– गढवाल हिमालय उत्तराखण्ड राज्य का पश्चिमी भूभाग है, यह क्षेत्र अपने धार्मिक सामाजिक स्वरूप के साथ–साथ भौगोलिक विषमता एवं भिन्नता के साथ सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है? इसका अक्षांशीय विस्तार 29 डिग्री 26′ 28″ उत्तर से 32 डिग्री 27′ 51″उत्तर एवं देशन्तरीय विस्तार 77 डिग्री 34′ 45″ पूर्व से 80 डिग्री 6′ 56″ पूर्व के मध्य स्थित है। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल 32887 वर्ग किमी0 है, इसमे सात जिले (देहरादून, हरिद्धार, उत्तरकाशी, चमोली, टिहरी, रूद्रप्रयाग, पौडी गढवाल) समिलित हैं। प्रशासनिक दृष्टि से यहॉ 31 तहसील 54 विकास खण्ड व दो महा नगर व 44 स्वायतशासी नगर इकाईयॉ तथा 04 छावनी वर्ड हैं। 2011 की जनगणनानुसार गढवाल हिमालय की जनसंख्या कुल 5,857,294 है, घनत्व 180 प्रति वर्ग किमी0 है। यहॉ गढवाली, जोनसारी बोली, बोली जाती है। गढवाल में सबसे ऊची चोटी नन्दा देवी(8,716 किमी0 25643 फीट) पर्वत विध्यमान है। इसके पूर्व में कुमाऊ मण्डल, पश्चिम में हिमाचल

प्रदेश, तिब्बत व दक्षिण में उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र स्थित है। यहा सतत विशाल हिम नदीय क्षेत्र के साथ अपार प्राकृतिक वन सम्पदा से आच्छादित 36 प्रतिशत भू–भाग संरक्षित किए हुऐ है।

गढवाल हिमालयी क्षेत्र में परिवहन माध्यमों का विकास– इस क्षेत्र में परिवहन माध्यमों के रूप में सडक परिवहन, वायु परिवहन, और रेल परिवहन का विकास तीव्र गति से जारी है। यहा सडकों का विकास धरातलीय दशाओं के अनुरूप हुआ है, जिन भागो में तीव्र ढाल या धरातलीय विषमतायें अधिक मिलती है वहां सडको का निर्माण सीमित मात्रा में हो पाया है, अधिकांश पुराने व नये मार्ग नदियों की घाटियों से ही होकर जाते है। क्योंकि पहाडी क्षेत्रो में नदी घाटियां ही विभिन्न क्षेत्रों को प्राकृतिक रूप से सम्पर्क यातायात स्थापित करने का सरल व सुगम माध्यम रहा है, यही कारण है कि गढवाल के अधिकांश नगरों का विकास नदी घाटियों में ही हुआ है। यहॉ नगर–ग्रामीण भागों को जोडने के लिऐ सर्पिलेकार सडक मार्ग र्निमित किये गये है। पादुका स्थल के अनेक भागों से आन्तरिक सुदूरपूर्व अंचल जोडे गये हैं, इस क्षेत्र में लगातार सडकों का जाल विछता जा रहा है, आज प्रत्येक गॉव सडक मार्ग से जुडता जा रहा है। यहा सडकों का जाल विछाने में वी0आर0ओ0, सी0पी0 डब्लडी, पी0डब्ल्यू डी0 जैसी संस्थाऐं सडक र्निमाण कार्यो में तत्परता से लगी हुई है। जिससे सम्पूर्ण क्षेत्र आर्थिक समृद्धि की ओर अग्रसर होता जा रहा है? गढवाल क्षेत्र में 1905 में गढवाल सडक आन्दोलन से हुआ, इस समय गढवाल समाचार पत्र के माध्यम से जन आन्दोलन चलाकर ततकालिन ब्रिटिश सरकार से गढवाल क्षेत्र में सड़क बनाने की मांग की गई, उस समय कोटद्वार से बनियकुण्ड तक पहली सडक बनी। उत्तराखण्ड सड़क परिवहन 28,508 किमी0 है, जिसमें 1,328 किमी0 राष्ट्रीय राजमार्ग है, और 1,543 प्रान्तिय राज मार्ग हैं।

गढ़वाल हिमालयी क्षेत्र के प्रमुख राज मार्ग

क0स राष्ट्रीय राज मार्ग का नाम	मार्ग संख्या	किमी0
1– दिल्ली–हरिद्धार–ऋषिकेश–बद्रीनाथ	58	373
2–हिमाचल–ढालपुर–सहसपुर–देहरादून–हरिद्धार	72	100
3– रूडकी–भगवानपुर–उत्तर प्रदेश सीमा	73	20
4– रूद्रप्रयाग–गुप्तकाशी–केदारनाथ	109	76
5– पंतनगर–अल्मोडा–द्वारहाट–गैरसैण–कर्णप्रयाग	87	284
6– ऋषिकेश–टिहरी–धरासू–खरसारा–यमोत्री	94	160
7– धरासू–उत्तरकाशी–मनेरी–गौरीकुण्ड–गंगोत्री	108	127
8– उ0प्र0 सीमा–कोटद्वार–पौडी–श्रीनगर	119	135
9–चकराता, मसूरी,चम्बा न्यू टिहरी गडोलिया मलेथा	707	310

स्रोत– स्टैडी फ्राईःउ0ख0में परिवहन के साधन

आजादी के उपरान्त कोटद्वार–पौडी–श्रीनगर–कर्णप्रयाग–बद्रीनाथ मोटर मार्ग का र्निमाण हुआ, 1976 से1980 तक गढवालमंण्डल के सम्पूर्ण तहसील व ब्लॉक मुख्यालयों को सडक मार्गो से जोडन का कार्य किया गया? आज गढवाल हिमालय क्षेत्र में कुमॉऊ हिमालय की तुलना में सडको की लम्बाई अधिक है। राज्य में राष्ट्रीय राजमार्गों की संख्या 14 है जिस की कुल लम्बाई 1375 किमी0 है। इसमें राष्ट्रीय राजमार्ग सं0 58 दिल्ली–बद्रीनाथ, राष्ट्रीय राजमार्ग सं0 109 रूद्रप्रयाग– गौरी कुण्ड(केदरनाथ), राष्ट्रीय राजमार्ग सं0 108 हरिद्धार– ऋषिकेश–गंगोत्री, राष्ट्रीय राज मार्ग सं0 94 ऋषिकेश– यमनात्री, राष्ट्रीय राजमार्ग सं0 72 ढालपुर– सहसपुर–देहरादूद–हरिद्धार, राष्ट्रीय राजमार्ग सं0 72 ए उत्तर प्रदेश सीमा–माजरा–देहरादून, राष्ट्रीय राजमार्ग सं0 73 रूडकी– भगवानपुर–उ0 प्र0 सीमा, राष्ट्रीय राज मार्ग सं0 87 कर्णप्रयाग–गैरसैण–रानीखेत–हल्द्वानी–रूद्रपुर–पन्तनगर–उ0 प्र0 सीमा, राष्ट्रीय राजमार्ग सं0 119 कोटद्वार–पौडी–श्रीनगर, इस प्रकार गढ़वाल क्षेत्र में कुल 09 राष्ट्रीय राजमार्ग के अतरिक्त प्रत्येक जनपद में मुख्य जिला मार्ग व ग्रामीण सम्प्रर्क मार्गो की संख्या में उत्तरोत्तर बृद्धि हो रही है? वर्तमान में इन मोटर मार्गो पर उत्तराखण्ड परिवहन और एक दर्जन से अधिक निजी कम्पनियों के बाहन प्रतिदिन आवागमन कर रहे हैं।

वायु परिवहन– गढवाल हिमालयी क्षेत्र में सर्व प्रथम भानियावाला देहरादून से हवाई सेवा प्रारम्भ की गई, बाद में इसे जौलीग्राण्ट नाम दिया गया, यहां वायु सेवा 1982 से शुरू कियी गई थी। यह क्षेत्र देहरादून से 30 किमी0 तथा ऋषिकेश से 23 किमी0 दूरी पर स्थित है। 1937 में हरिद्धार से बद्रीनाथ हिमालय ईयर वेज कम्पनी द्वारा वायु सेवा प्रदान की गई। 1938 में गौचर को उपयागी स्थल मानकर बद्रीनाथ–केदारनाथ के लिये पहली वायु सेवा प्रारम्भ हुई। आज यहां चिन्यालीसौड, व गौचर में हवाई पट्टी निर्मित कर गंगोत्री, केदारनाथ– बद्रीनाथ धामों के लिए सेवाऐं प्रदान हो रही है। जिससे देश–विदेश के शैलानी यहॉ की यात्राऐं कर रहे है। वर्तमान समय में जौली ग्राण्ट हवाई अड्डे को विस्तृत कर बोईंग और एयर बस उतारने लयक बनाया गया है। केदारनाथ यात्रा के लिऐ 16 मई, 2003 से पवन हंस कम्पनी द्वारा अगस्तमुनि, फाटा,सेरसी, से हेलीकॉप्ट सेवा प्रारम्भ की गई, वर्तमान में हरिद्धार में एक एविशन अकादमी और हवाई अड्डे का निर्माण किया जा रहा है।

रेल परिवहन– गढ़वाल हिमालय के ऋषिकेश–हरिद्धार और कोटद्धार दो द्वार कहे जाते हैं। इन तीनों नगरों को सन 1887 में रेल मार्ग से ब्रिटिश शासकों द्वारा जोडा गया था। इसके बाद यहॉ एक इंच भी रेल लाईन नही बिच्छाई गई। जबकि देहरादून भी इस समय रेल यातायात से जुड गया था, 1 जनवरी 1886 में लक्सर जंक्सन को हरिद्वार से जोडा गया था। सन् 1900 में देहरादून उत्तर रेलवे का अन्तिम रेलवे स्टेशन स्थापित हो गया था, किन्तु गढवाल के पर्वतीय अंचल लम्बे समय तक इस सेवा से वंचित रह गये थे जो बडा दुर्भाग्य कहा जा सकता है, जबकि ब्रिटिश शासकों द्वारा सन 1901 तक कर्णप्रयाग –ऋषिकेश रेल लाईन का सर्वेक्षण कार्य किया जा चुका था। लेकिन तत्कालिन सरकारों द्वारा इस ओर कोई ध्यान नही दिया गया, किन्तुं वर्तमान वर्ष 2011–12 में कर्णप्रयाग–ऋषिकेश का सर्वेक्षण कार्य पूर्ण कराया गया , केन्द्र सरकार द्वारा सन 2014 से ऋषिकेश –कर्णप्रयाग रेल लाईन का कार्य तीव्र गति से चल रहा है। यहा रेलवे लाईन 125 किमी0 लम्बी है जिसमे 17 रेलवे सुरंगें व 35 पुल तैयार हो चुके है या निर्माण कार्य चल रहा है यह रेलवे लाइन केवल मात्र 21 किमी0 जमिन के बाहर है बाकि शेष टनलो के अन्दर से होकर गुजरेगी ,सन् 2024–25 तक बनकर पूर्ण होने का अनुमान है। इस प्रकार इस क्षेत्र में अभी तक 283 :76 किमी0 बडी लाइने व 61:15 किमी0 छोटी लाइने स्थापित है।

जल परिवहन – गढ़वाल हिमालय से प्रवाहित होने वाली अलकनन्दा, भागीरथी, मन्दाकिनी, पिण्डर, यमुना आदि सत्त वाहनी नदियों पर छोटी नौकाओं का संचालन के साथ–साथ नावों के द्वारा रीबर राफटिंग भी कियी जा रही है। जिसके लिऐ पर्यटको की संख्या ग्रीष्मकाल में यहां जल कीडा हेतु बडी मात्रा में पहुच रही है।

आधुनिक परिवहन साधनो का योगदान– किसी क्षेत्र विशेष के सांस्कृतिक सम्पर्क की जानकारी व विचारों के आदान प्रदान में यातायात साधनो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गढवाल हिमालय के सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक विकास में परिवहन माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होने के कारण क्षेत्र विशेष के कृषि उत्पादो में उत्तरो त्तर बृद्धि हुई है, और शीघ्र नष्ट होने वाले उत्पादो को बाजार तक पहुचाने की उचित व्यवस्था हुई, देश व दुनिया के बाजारों तक यहॉ के उत्पाद सुगमता से पहुच रहे है, बल्कि यहॉ के परम्परागत उत्पादों (कोदा,झगोरा, काणी, फाफर, चोलई, मोटी अनाज व मोटी दाल जैसे – काले भट्ट , पहाडी राजमा, पहाडी आलू , गेहत , चौलाई, तैडू– पिनालू, कौडी, व विविध प्रकार की साग सब्जियों , फल फूलो) को देश दुनिया में पहचान भी मिली है। इससे यहॉ की अर्थव्यवस्था में 2.61 प्रतिशत की लगात्तार बृद्धि दर्ज हो रही है।

जडी–बुटी के रूप में– यहॉ के कण–कण में भागावान और प्रण–प्रण में औषधि विध्यमान है। परिवहन एवं संचार साधनो के विकास से क्षेत्र विशेष के प्रत्येक जनपद में भेषज संघ की स्थापना होने से यहॉ की दुर्लभ जडी–बुटी जैसे (कीडाजडी, गणेश जडी, गुच्छी, कुटी, झुला, जंगली ककडी, करोंदा , किलमोड की जडी,शंख पुष्पी,, वज्रदन्ति, टिमर, गिंजाड, अमृता आदि) को विश्व स्तर के बाजारों में भेजा जाने लगा है। इससे यहॉ की आर्थिकी में बृद्धि के साथ–साथ रोजगार के अवसर भी बढे हैं। वर्तमान समय में जडी–बुटी से राज्य को 300 करोड रूपये सेअधिक की आय प्राप्त हो रही है।

पर्यटन के क्षेत्र में– परिवहन साधनों के विकास से पर्यटन के क्षेत्र में सुलभ परिवहन साधनों के होने से पर्यटकों की संख्या में प्रतिवर्ष बृद्धि होती जा रही है, इससे राज्य के राजस्व में भी 12–.15 हजार करोड रूपये की बढोत्तरी होती जा रही है। वर्तमान समय में धार्मिक तीर्थ यात्रा के साथ–साथ मनोरंजक पर्यटक स्थलों तक परिवहन माध्यमों का विकास होने से औली,रूपकुण्ड, फूलो की घाटी, सुपताल झलताल ,वदनी कुण्ड, सप्ताल, लैन्सीडऊन , पौडी, देवरियाताल, बधाणी ताल, विरही ताल, दयारा बुग्याल, फूलों की घाटि, अत्रमुनि झरना, आला बुग्याल , आदि दुर्गम नैसर्गिक स्थलों की यात्रा में भी बेत्तहासा बृद्धि देखी जा सकती है,जिससे राजस्व में भी लगात्तार बृद्धि हो रही है। इसके अलावा सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में यहां के मठ–मन्दिरों मेले त्यौहारो उत्सवों में भी पर्यटको की संख्या बढती जा रही है। सहासिक पर्यटन के रूप में रीवर राफटिंग के लिऐ शिवपुरी ऋषिकेश, कर्णप्रयाग– गौचर ,पैरागलाईडिंग,–पौडी–ल्वाली कण्डोलिया, सुरकण्डा, गौचर , चम्बा, उत्तरकाशी, आदि । रॉक क्लपिंग, टरेकिंग –मण्डल–अनुसुया, चौपता, लैंसिडाउन ,स्केटिंग में औली आदि विविध स्थलो में सहासिक पर्यटको की संख्या में लगात्तार बृद्धि होती जा रही है? राज्य को पर्यटन से लगभग 12000 करोड राजस्व की प्राप्ति के साथ –साथ स्थानीय युवाओं को होटल, स्टेहोम, टूर गाईड, ट्रवलिंग

ऐजेंन्सी ,ट्रैकर पौटर के रूप में रोजगार भी बडी तात्रा में प्राप्त हो रहा है? उत्तराखण्ड में पर्यटन आर्थिकी का प्रमुख जरिया है, पर्यटन का राज्य की सकल घरेलु उत्पादन में 50 प्रतिशत से अधिक योगदान है।

पर्यटन के क्षेत्र – परिवहन माध्यमों के विकास से आवागमन सुगम होने से सैकडों नवीन पर्यटक स्थल पर्यटन के मानचित्र पर सामने आये है, पंचबद्री –पंचकेदार, पंच प्रयाग, पंचकुण्ड, के अलाव यहॉ के छोटे बड़े मन्दिर व मेले त्योहार सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में उभर कर आये हैं, इस क्षेत्र के झरने, तालाब, कुण्ड, बुग्याल पर्यटकों के लिऐ मनोरंजक(मनमोहक) पर्यटक स्थल के रूप में विकसित हुऐ हैं।यहां के मध्यवर्ती ढालों व चौरस मैदानों में पैराग्लाईडिंग,सत्त वाहनी नदीयों में रीवर रॉफटिंग,और यहां के तीव्र चट्टानो पर रॉक क्लेपिंग जैसे सहासिक पर्यटक स्थलों के रूप में सुरकुण्डा, नई टिहरी, प्रताप नगर, लम्बगॉव–भटवाडीरवाई,जौनसार,चकराता, त्योनी,उत्तरकाशी , पौडी में कण्डोलिया,ल्वाली, कणाश्रम, सतपुली, चमोली में चोपता रूद्रनाथ, रूपकुण्ड, घाधरिया गोविन्द घाट, शिवपुरी, गौचर नगरासू ,ग्वलदम, खिर्सू ,धनोलटी मसूरी, कालसी चकराता, घाघरिया–गोविंन्दघाट, विनसर,देवलगढ़ आदि क्षेत्र पर्यटन क्षेत्रों के रूप में विकसीत हुऐ है। इस क्षेत्र में परिवहन साधनो के विकास से प्रति वर्ष पर्यटको की संख्या में लगातार उत्तरोत्तर बृद्धि देखी जा रही है जो सुगम परिवहन साधनों का परिणाम है।

उद्योग धन्धो के रूप में:– पविहन माध्यमों के विकास से इस क्षेत्र में उद्योगा–धन्धो का विकास तीव्र गति से होता जा रहा है, यहॉ पर परम्परागत कुटीर उद्योग के रूप में रिंगाल की टोकरियां , वर्तन, के साथ –साथ सजावट की वस्तुऐं ,लकडी का फरनीचर,(फनीचर उद्योग), पलाई वुड उद्योग, जडी– बुटी उद्योग, मत्सय पालन, मोन पालन, दुग्ध एवं डयरी उद्योग, होटल उद्योग, कम्पोस्ट खाद उद्योग, फल– फूल उद्योग, जैम–जैली, अचार, मुरबा, मोटे अनाजों की फूड प्रोससिंग, कृषिगत उद्योग –धन्धों में बृद्धि हुई है इससे यहा की आर्थिकी में भी लगातार बृद्धि हो रही है। इसके अतरिक्त मैदानी क्षेत्र के कोटद्वार, देहरादून, हरिद्धार, रूडकी, ऋषिकेश में लीसा प्लांट, सरिया सीमेण्ट फैक्टरी, ,स्टील प्लांट, रबर उद्योग, बी0एच0 एल0 व महेंन्द्रा, मारूती ,स्कूटर मोटरसाईकिल आदि बाहन निर्माण उद्योग स्थापित हैं इन उद्योगो में हजारें लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ है। वर्तमान समय में उत्तराखण्ड में 330 बड़े उद्योग और 68888 सूक्ष्म लघु व मध्यम उद्योग हैं इनमें 4.66लाख से अधिक श्रमिक कार्यरत हैं, ये सभी उद्योग राज्य में 52000 करोड से अधिक का पूॅजी निवेश कर रहे है।

निष्कर्ष– गढ़वाल हिमालयी क्षेत्र में लगातार पविहन माध्यमों का जिस गति से विकास हो रहा है उससे इस क्षेत्र विशेष की कृषि व कृषिगत उत्तपादों को उचित स्थान मिलने के साथ–साथ उचित बाजार भी उपलब्ध हुआ है, यहां के मोटे अनाजो,व दालों,साग–सब्जीयों,फल–फूलो, जडी–बुटियों की पहचान विश्व स्तर पर होकर कृषिगत वस्तुओं की मांग भी बढी है। इसके साथ ही यहॉ उद्योग–धंन्धों की संख्या में भी लगातार बृद्धि होती दिख रही है, परिवहन साधनो की सुगमता से यहा का पर्यटन व्यवसाय पर्यटन उद्योग के रूप में विकसित हुआ है। आज प्रति वर्ष लाखो की संख्या मेंदेश–विदेश के पर्यटन व तीर्थाटन करने वाले लोग यहा पहुच रहे हैं जिससे यहॉ के राजस्व में भी बृद्धि दर्ज हो रही है। आज इस क्षेत्र में सुगम परिवहन साधनो से छोटे– बड़े उद्योगों की स्थापना भी हो रही है, जिससे यहॉ नये रोजगार के क्षेत्रो का निरंतर विकास होता जा रहा है। यह देख गया कि यहां के जो युवा पहले अन्य राज्यो में रोजगार हेतु जाय करते थे वे आज सुगम परिवहन माध्यमों के विकास के फलरूप परिवहन व्यवसाय, कृषि, उद्यानीकरण, बागवानी,मत्सय पालन, मौनपालन, डेयरी उद्योग,जूस,जैम–जैली, अचार, फूड प्रससिंग उद्योग, पर्यटन, होटल उद्योग,जडी– बूटी, हथकरघा उद्योग, आदि व्यवसायें में संलगन है। इससे राज्य की आय में लगातार बृद्धि दर्ज हो रही है। इस प्रकार कह सकते हैं कि इस विषम भौगोलिक क्षेत्र में आधुनिक परिवहन माध्यमों का विकास क्षेत्र विशेष के लिऐ वरदान साबित हुऐ हैं।

सन्दर्भ सूची

1– लॉ प्रिमा मिशन के तोलिका लेख– तिब्त पर्ण–3, 4 ?

2– फोनिया, केदार सिंह (1989) : उत्तराखण्ड के धार्मिक एवं पर्यटन स्थल, विनसर प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 09,?

3– नैथानी, शिव प्रसाद, (1998): उत्तराखण्ड साहित्य और पर्यटन, पावेत्री प्रकाशन, श्रीनगर, पृष्ठ संख्या– 17,?

4– अमर उजाला, 12जून 2015, : देहरादून संस्करण, प्रकाशन देहरादून।

4 – नेगी, भालचन्द,(2010): गढ़वाल हिमालय के सांस्कृतिक परिवर्तनो में परिवहन एवं संचार साधनों की भूमिका : रिसरच ईडिया प्रेस,ई–6: 36, संगम विहार , नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 52,?

5– स्टैडिफ्राई डॉट कॉम, उत्तराखण्ड, 20 दिसम्बर, 2016, उत्तराखण्ड में परिवहन के साधन, पृष्ठ–1–2,?

6– उत्तराखण्ड राज्य के राजमार्ग–विकिपीडिया